सुधा ओम ढींगरा

01. अकेलापन

झड़े पत्तों से
ठुण्ड–मुण्ड हुए
वृक्ष,
बच्चों के
घर छोड़कर
जाने के बाद
बुजुर्ग माँ–बाप से लगे।

02. बदलाव

किताबों में रखे फूल
तकिये के नीचे रखी डायरियाँ
प्यार के उमड़ते झरने
और रिश्तों के ताल
व्यावहारिकता के
सूरज ने सुखा दिए...
शायद काल बदल रहा है!

03. वादे

रेत के ढेर पर खड़ी है
वादों से भरी दुनिया...
दो वक्त की/रोटी तलाशते
बच्चे को दे पाई है तो
बस वादों की नमीं,
दिलासों की ठंडक...
और सोचती है कि
एक दिन वह बनेगा
भविष्य की नींव का पत्थर.....

04. खिलना

बर्फ से/दबी–घुटी
घास की पीड़ा
सूर्य ने देख ली,
अपनी किरणें भेज
बर्फ पिघलाकर
घास को सहलाया।
खाँसी–जुकाम से
मुक्त हुई/नन्हीं बच्ची–सी घास
खिल उठी!

■101 Guymon Court, Morrisville, NC-27560 USA
Email : sudhadrishti@gmail.com

भावना कुँअर

01.

वो अँधेरे में भी
साफ नजर आते हैं
हम रोशन नगर के बाशिंदे
देखो हमें तो लोग
टिमटिमाते दिए बुलाते हैं।

02.

समंदर में उठे तूफान सी
कभी उमड़ती थी तेरी चाहत
आज तूफान से पहले की
है क्यूँ ये खामोशी छाई।

03.

तुम्हारे पर्स की तहों में
लिपटी रहती थी यादें बनी
मेरी नन्हीं निशानियाँ
आज वहाँ किसी की
तस्वीर नज़र आती है

04.

आँसुओं का सैलाब
जो उमड़ा मेरा
वो अनजान बन
यादों की कश्ती डुबा
बीच मझधार छोड़ पतवार
खामोशी संग निकल लिये।

■सिडनी, आस्ट्रेलिया/भारत में–द्वारा श्री सी.बी.शर्मा, आदर्श कॉलोनी, एस.डी.डिग्री कॉलिज के सामने, मुज़फ्फरनगर(उ.प्र.) ईमेल : bhawnak2002@gmail.com